स्वागत भाषण*

दुव्वुरी सुब्बाराव

मुझे गवर्नर स्टेनली फिशर का स्वागत करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है। श्री स्टेनली शीघ्र ही तृतीय पी.आर ब्रह्मानंद स्मारक व्याख्यान देंगे। स्वर्गीय प्रोफेसर ब्रह्मानंद के परिवार के सदस्यों - श्री पी.आर. रामास्वामी, और श्रीमती तथा श्री पी.आर. विश्वनाथ का भी मैं हार्दिक स्वागत करता हूँ। सभी आमंत्रितों का गर्मजोशी से स्वागत करना चाहता हूँ जिन्होंने इस व्याख्यान के लिए समय निकाला है।

प्रोफेसर ब्रह्मानंद

2. प्रोफेसर ब्रह्मानंद एक विशिष्ट शिक्षाविद, एक ख्यातिप्राप्त शोधकर्ता और एक सम्मानित शिक्षक थे। भारत में अर्थशास्त्र के अध्यापन और शोध के क्षेत्र में उनका योगदान जगजाहिर है।

3. यद्यपि प्रोफेसर ब्रह्मानंद के शोध की रुचियां बहुत व्यापक थीं तथा उन्हें कई महत्त्वपूर्ण योगदानों के लिए याद किया जाएगा। उनका सर्वाधिक स्थायी योगदान 'वेतन-माल मॉडल' का है जिसे उन्होंने 1950 के दशक में विकसित किया था। इसने उन लोगों को प्रेरणा प्रदान की जिन्हें 'बंबई विचारधारा' के रूप में जाना जाता है। प्रोफेसर ब्रह्मानंद के पास महालनोविस रणनीति में समाहित तात्कालिक विचारधारा के विरुद्ध जाने का बौद्धिक साहस और दृढ़निश्चय था। उन्होंने तर्क दिया कि निर्धनता के निवारण का सबसे सही उपाय अल्पावधि में रोजगार और उपभोग पर जोर देना है जिससे मध्यावधि से दीर्घावधि में पूंजीगत माल के उत्पादन को स्वयमेव बढ़ावा मिलेगा। क्या भारत की स्थिति अच्छी होती यदि इसने 'बंबई विचारधारा' का अनुगमन किया होता, यह हमेशा एक रोचक रहस्य बना रहेगा।

4. यद्यपि प्रोफेसर ब्रह्मानंद रेड्डी ने अपने योगदानों से अर्थशास्त्र के लगभग सभी क्षेत्रों को समृद्ध बनाया, लेकिन मौद्रिक अर्थशास्त्र उनकी विशिष्टता रही। रिज़र्व बैंक को प्रोफेसर ब्रह्मानंद के उर्वरक मस्तिष्क से कई तरीके से लाभ हुए। सबसे उल्लेखनीय है कि उन्होंने 19वीं सदी का भारत का मौद्रिक इतिहास हमारे लिए लिखने का बीड़ा उठाया। उन्होंने जो भी कार्य किया वह एक शानदार योगदान रहा जो न केवल पारंपरिक मौद्रिक और अंतरराष्ट्रीय व्यापार सिद्धांतों के विकास के समकालिक था बल्कि उसने उस समय की मौद्रिक नीति की परिचर्चा पर नई रोशनी भी डाली।

5. अर्थशास्त्र के अध्यापन और शोध के प्रति उनकी पूर्ण प्रतिबद्धता के लिए श्रद्धांजलि के रूप में और भारतीय रिज़र्व बैंक के साथ उनके लंबे जुड़ाव के लिए सम्मान के रूप में भारतीय रिज़र्व बैंक ने 2004 में प्रोफेसर ब्रह्मानंद की याद में एक व्याख्यानमाला शुरू की।

प्रोफेसर स्टेनली फिशर

6. हमारे लिए यह गौरव की बात है कि आज एक दूसरे स्वनामधन्य शिक्षाविद और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्यातिप्राप्त अर्थशास्त्री प्रोफेसर स्टेनली फिशर तृतीय पी.आर ब्रह्मानंद स्मारक व्याख्यान देंगे। प्रोफेसर स्टेनली इतने विख्यात हैं कि मेरे लिए उनका परिचय देना अनावश्यक होगा। लेकिन परंपरा के निर्वाह के लिए सम्मानस्वरूप मुझे ऐसा करना ही होगा।

7. प्रोफेसर फिशर, जो वर्तमान में बैंक ऑफ इजराइल के गवर्नर हैं, की एक शिक्षाविद के रूप में, एक शिक्षक के रूप में, एक आर्थिक नीति के परामर्शदाता और प्रशासक के रूप में और उनकी वर्तमान हैसियत में, एक आर्थिक नीति प्रैक्टिशनर के रूप में भारी ख्याति है। उनकी शैक्षिक योग्यताएं सराहनीय हैं - मसाच्यूट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एमआइटी) से पीएचडी, शिकागो विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र के सहायक प्रोफेसर तथा एमआइटी में अर्थशास्त्र के प्रोफेसर। आपको निःसंदेह मानना होगा कि इस प्रकार की योग्यता रखने वाले प्रोफेसर फिशर अमरीकन विचारधारा वाले साल्ट वॉटर और फ्रेश वॉटर अर्थशास्त्रियों के बीच वर्ष भर चलने वाले विवाद के लिए एक आदर्श रेफरी का काम कर सकते हैं।

8. प्रोफेसर फिशर ने कई उच्चस्तरीय संस्थाओं में वरिष्ठ पदों पर कार्य किया। वे डेवलपमेंट इकॉनोमिक्स के वाइस प्रेसीडेंट तथा विश्व बैंक में मुख्य अर्थशास्त्री थे। इसके दो वर्ष पश्चात उन्होंने अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष का प्रथम उप प्रबंध निदेशक बनने के लिए मुख्य व्यापारिक स्थान वाशिंगटन में 19वीं स्ट्रीट तक की यात्रा करके अपने करियर में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किया, जिस पद पर वे 1994 से 2001 तक सात वर्ष रहे। 2001 के अंत में प्रोफेसर फिशर वाशिंगटन स्थित प्रभावशाली वित्तीय परामर्शदात्री संस्था, 'ग्रुप ऑफ थर्टी' में शामिल हुए।

* मुंबई में 11 फरवरी 2011 को आयोजित तृतीय पी.आर. ब्रह्मानंद स्मारक व्याख्यान के अवसर पर भारतीय रिज़र्व बैंक के गवर्नर डॉ.दुव्वुरी सुब्बाराव द्वारा दिया गया स्वागत भाषण।

9. अमरीका में ही नहीं,सारे विश्व में अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों की कम-से-कम दो पीढ़ियों ने स्वर्गीय रूडी डॉर्नबुश के साथ मिलकर इनकी लिखी मौलिक पाठ्यपुस्तक 'मैक्रोइकॉनोमिक्स' पढ़कर समष्टि अर्थशास्त्र सीखा है। उन्होंने कई अन्य पुस्तकें लिखीं, इन सभी में उनके मूल विचार, बौद्धिक अंतर्दृष्टि और स्पष्टता को बढ़ाने वाली बातें हैं।

10. स्टेनली फिशर ने मई 2005 में बैंक ऑफ इजराइल के गवर्नर के रूप में कार्यग्रहण किया। वे पहले भी बैंक ऑफ इजराइल से जुड़े रहे थे जहां उन्होंने 1985 में इजराइल के आर्थिक स्थिरीकरण कार्यक्रम के लिए अमरीकी सरकार के एक परामर्शदाता के रूप में कार्य किया। 2 मई 2010 को उन्हें दूसरी बार शपथ दिलाई गयी जिसमें इजराइल के प्रधानमंत्री ने स्टेनली फिशर के बारे में कहा 'ये एक ऐसे व्यक्ति हैं जिनके बारे में सारे संसार में एक राय है कि वे बेहतरीन कार्य करते हैं'।

11. प्रोफेसर फिशर का शैक्षणिक शोध और विश्लेषण में एक विशेष स्थान है। किसी अर्थव्यवस्था को स्थिर करने में सक्रिय नीति की भूमिका पर और नीति की प्रभावकारिता में अंतराल और अनिश्चितता के प्रभाव पर उनका प्रमुख योगदान रहा है। इसके बाद प्रोफेसर फिशर ने अपने शोध को संगत प्रत्याशा, मूल्यों की अवरोधी स्थिति और वेतन सूचकांकीकरण के संदर्भ में नीति की भूमिका तक बढ़ाया।

इजराइल

12. गवर्नर फिशर के नेतृत्व में बैंक ऑफ इजराइल पर एक संक्षिप्त टिप्पणी देना चाहूंगा। इजराइल संकट से सापेक्षिक रूप से बिना हानि उठाये निकल आया और उसका प्रमुख श्रेय स्टेनली को जाता है। एक प्रश्न का उत्तर देते हुए कि यह कैसे घटित हुआ उन्होंने उत्तर दिया, और जिसे मैं यहां उद्धृत करता हूँ *'जब संकट आया तो मैंने दूर से देखा कि यह मुद्रा के मूल्य में बढ़ोतरी के रूप में आ रहा है, तो हमने इसको विदेशी मुद्रा सौदों से संतुलित किया। जब लीमन ब्रदर धराशायी हुआ तो हमने निर्णय लिया कि यह समय ब्याज दरों में कटौती करने का है। कौन कहता है कि शिक्षाविद अच्छे प्रैक्टिशनर नहीं हो सकते?'*

13. इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर मैनेजमेंट डेवलपमेंट (आइएमडी) की विश्व प्रतिस्पर्धा वार्षिकी के अनुसार 2010 में कुशल कार्य करने वाले केन्द्रीय बैंकों में बैंक ऑफ इजराइल को पहला स्थान मिला - यह स्टेनली के नेतृत्व और दूरदर्शिता की एक दूसरी महानता है। सितंबर 2009 में विकसित विश्व में, बैंक ऑफ इजराइली ब्याज दरें बढ़ाने वाला पहला बैंक था जो स्टेनली की बुद्धिमता को दर्शाता है। अक्तूबर 2010 में,यूरोमनी पत्रिका द्वारा स्टेनली फिशर को वर्ष का केंद्रीय बैंक गवर्नर घोषित किया गया।

केंद्रीय बैंक के लिए सबक

14. प्रोफेसर फिशर आज 'वैश्विक संकट से केन्द्रीय बैंक को सबक' विषय पर बोलेंगे। इस विषय की किसी व्याख्या की आवश्यकता नहीं है, लेकिन इसके लिए संदर्भ की जरूरत हो सकती है। जब फ्रांस की क्रांति के बारे में माओ जेडौंग से पूछा गया था तो उनका प्रसिद्ध उत्तर था ''अभी कहना जल्दबाजी होगी''। माओ जैसे लोगों, जो इतिहास को व्यापक अर्थ से लेते हैं, का कहना है कि संकट से सबक लेना अभी बहुत जल्दबाजी होगी। नीति के प्रैक्टिशनर इतिहासकारों की विलासिता नहीं रखते; उन्हें घटित हो रही गतिविधियों के बारे में तत्काल प्रतिक्रिया करनी होती है और अनुभव के सबकों से काम करना होता है।

15. एक दूसरा कारण है कि संकट के सबकों के बारे में बात करना क्यों इतनी जल्दबाजी नहीं है; वास्तव में संकट के सबकों को सीखने में हमें क्यों अधिक सक्रिय होना चाहिए। मेहनत से लिखी गई अपनी शोध पुस्तक 'दिस टाइम इज डिफरेंट: एट सेंचुरीज ऑफ फाइनेंसियल फॉली' में केनेथ रोगॉफ और कारमैन रेनहार्ट ने दर्शाया है कि कैसे आठ सौ वर्षों से भी अधिक समय से, सभी वित्तीय संकटों के लिए एक ही प्रकार के मूलभूत कारण खोजे जा सकते हैं। ऐसा लगता है कि एक के बाद एक संकट आते गये और हमने कुछ भी नहीं सीखा। हर बार, विशेषज्ञों ने एक ही स्वर अलापा है कि 'यह समय भिन्न है' और वे यह दावा करते रहे कि पुराने नियम लागू नहीं होते और नई स्थिति पिछली स्थिति से भिन्न है।

16. क्या यह समय वास्तव में केन्द्रीय बैंकों के लिए भिन्न है? याद होगा कि केन्द्रीय बैंक संकट के पहले के वर्षों में उल्लसित थे। उन्होंने सोचा कि उन्होंने स्थिर वृद्धि, कम मुद्रास्फीति और कम बेरोजगारी की कोई चमत्कारी चीज खोज ली है और उन्होंने खुद को विजेता घोषित कर दिया। तभी यह संकट केन्द्रीय बैंकों की विश्वसनीयता और उनकी ख्याति पर एक गहरा धक्का साबित हुआ। सभी नीति-निर्माताओं की तरह केंद्रीय बैंकों के लिए चुनौती है कि वे संकट से सबक सीखें और अपनी नीतियों में उन्हें शामिल करें।

17. केन्द्रीय बैंकों के लिए संकट से सबक लेने और खोई हुई विश्वसनीयता को पुनः प्राप्त करने की तात्कालिक चुनौती का सामना करने हेतु अपने अनुभवों को बांटने के लिए स्टेनली फिशर से विद्वान व्यक्ति और कौन हो सकता है। मुझे तृतीय ब्रह्मानंद स्मारक व्याख्यान देने के लिए गवर्नर स्टेनली फिशर को आमंत्रित करते हुए बड़ी प्रसन्नता हो रही है।